नहीं किया जा सकता किन्तु ज्यों ज्यों अन्ना साहब के अनशन के दिन बढ़ते गए त्यों त्यों देश की जनता के बीच आक्रोष भी बढ़ता गया। मीडिया में खबरें आने लगीं कि, देश के सभी हिस्सों से लाखों लोग दिल्ली की ओर कूच कर गए हैं। इस स्थिति के कारण मनमोहन सिंह सरकार की घबड़ाहट बढ़ गई तथा सरकार ने अन्ना साहब से बात करके समझौता करने का फैसला किया।

इस प्रकार मनमोहन सिंह सरकार झुकी तथा अन्ना साहब से समझौता किया कि, जन लोकपाल विधेयक ड्राफ्टिंग कमेटी (लेखन समिति) में सिविल सोसाइटी के सदस्यों को शामिल किया जावेगा तथा कोशिष की जावेगी कि, इस विधेयक को 15 अगस्त के पूर्व देश की संसद से पास कराया जावे। समझौता के अनुसार जन लोकपाल विधेयक ड्राफ्टिंग कमेटी में सिविल सोसाइटी के सदस्यों को शामिल कर लिया है तथा इस कमेटी की कुछ बैठकें हो भी चुकी हैं। अतः दिनांक 09/04/2011 को अन्ना साहब ने अपना अनशन समाप्त कर दिया।

इस प्रकार, भ्रष्टाचार के मामले में गले तक डूब चुके हमारे देश में जो राजनैतिक जगह छूटी हुई थी, उसे अन्ना साहब ने भरा है। इससे देश की आम जनता यह सोचने लगी है कि, अब भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी। किन्तु ऐसा कुछ खास होने वाला नहीं है क्योंकि देश की राजनीति जिस रास्ते पर चल रही है वह रास्ता भ्रष्टाचार की ओर जाता है, वह रास्ता बेरोजगारी की ओर जाता है, वह रास्ता मंहगाई बढ़ाने की ओर जाता है तथा वह रास्ता जाता है, देश की जनता की सम्पत्तियों और परिसम्पत्तियों को लूटने की ओर। हां, अन्ना साहब द्वारा यह खाली जगह भरने से एक जोखिम भरी स्थिति जरूर पैदा हो गई है।

इस बात की पूरी सम्भावना है कि, आने वाले कल में मजदूरों किसानों सहित देश की आम जनता पर अत्याचार होगा तथा किसी बड़े आंदोलन के खड़े होने की सम्भावनाएं बनेंगी। ***ऐसी स्थिति में, देशी और विदेशी पूंजीपतियों का गठजोड़ अन्ना साहब के आंदोलन के अनुभव से फायदा उठा सकता है। पूंजीपति वर्ग स्वयं ही किसी महापुरूष (हीरो) को पैदा कर देगा। उस महापुरूष से कोई आंदोलन कराएगा तथा मीडिया के द्वारा महिमा मंडित कराके आम जनता को उसके ईर्द-गिर्द इकट्ठा करेगा। बाद में उस महापुरूष के साथ लोकप्रिय समझौता कर लेगा तथा राज भी करता रहेगा और अपनी राजसत्ता भी कायम रखेगा।***

अतः महत्वपूर्ण बात यह है कि, राजनीति में स्वाभाविक रूप से या, प्रचलित भाषा में कहें तो, ऊपर से, मजदूरों किसानों और आम जनता के लिए जो जमीन अलाट की गई है, यदि वे अपनी जमीन को खुला छोड़ देते हैं और उसे घेरते नहीं हैं तो, स्थिति खतरनाक हो सकती है। इसलिए अन्ना साहब जैसे महापुरूषों के आंदोलनों का समर्थन करते हुए मजदूरों-किसानों सहित आम जनता को इस बात की कोशिश करना चाहिये कि, ऐसे लोकप्रिय आंदोलनों का पूंजीपति वर्ग नाजायज फायदा न उठाने पाये।

इसके लिए यह जरूरी है कि, मजदूर किसान सहित आम जनता, अपने हिस्से की राजनैतिक जमीन को घेरे और उस पर अपना कब्जा जमाए। इस जमीन पर खड़े होकर किया गया आंदोलन ही भ्रष्टाचार को रोक सकता है तथा आम जनता की भलाई की नीतियां बनवा सकता है।